‘भारत रत्न पं. रविशंकर द्वारा रचित नवीन रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन’

दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट डीम्ड यूनिवर्सिटी

दयालबाग, आगरा से संगीत विषय में

पी. एच. डी. की उपाधि हेतु

शोध प्रबंध की रूपरेखा

2017

निर्देशिका	सह निर्देशिका	शोध छात्रा
डॉ. नीतू गुप्ता	प्रो. सुभद्रा कुमारी सतसंगी	प्रगति द्विवेदी
असि. प्रो.(सितार)	विभागाध्यक्षा, संगीत विभाग	संगीत वादन(सितार)

विभागाध्यक्षा, संगीत विभाग	कला संकाय प्रमुख
प्रो. सुभद्रा कुमारी सतसंगी	प्रो. जे. के. वर्मा

कला संकाय संगीत विभाग

दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट डीम्ड यूनिवर्सिटी

दयालबाग, आगरा

भूमिका

चतुर्विध वाद्यो तत्,अवनद्ध,घन और सुषिर की परम्परा अत्यन्त प्राचीन रही है।तत् वाद्य के अंतगर्त तंत्री वाद्य,अवनद्ध के अंतगर्त चर्मावनद्ध वाद्य,घन क अंतगर्त धातु वाले वाद्य एवं सुषिर अर्थात् फूक स बजाये जाने वाले वाद्य,हमारे भारतीय संगीत मे महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

वाद्यों की परंपरा अति पुरातन है।भारतीय संगीत के आदि आचार्य भरत ने अपने ग्रंथ मे वाद्यों की बनावट, वाद्य निर्माण की कला और वादन सामग्री की जैसी विस्तृत चर्चा की है, उससे स्वतः प्रमाणित होता है कि तत्कालीन समय से ही वाद्य एवं वादन परंपरा अति समृद्ध रही है।

ज्ञातव्य है कि पूर्व म समस्त तंत्री वाद्य के संदर्भ मे सर्वप्रथम वीणा भाब्द का प्रयोग प्राप्त होता है।प्राचीन आचार्यों के अनुसार वीणा के विभिन्न रूप जैसे छोटी–बडी विभिन्न आकारों की वीणा, उंगली, कोण तथा गज से बजाई जाने वाली वीणा, इस प्रकार लगभग 40 वीणाओं का उल्लेख ग्रंथों मे प्राप्त होता है।वर्तमान समय मे तंत्री वाद्य के परिवर्तित एवं परिवर्द्धित रूप जो हमारे सामने है,वे अपने विकास की कई हजार वर्ष की यात्रा करके आज इन परिवर्तित स्वरूपों मे दिखाई देते हैं।

तंत्री वाद्यों के संदर्भ म जा भी वाद्य प्राप्त होते हैं उनमे आज के समय मे सितार सर्वाधिक प्रचलित वाद्य है जो मध्ययुग से विकसित होता हुआ अपने वर्तमान स्वरूप तक पहुंचा है।यह निश्चय ही अति लोकप्रिय एवं सुमधुर वाद्य है। सितार वाद्य की वादन परंपरा, जो कि विभिन्न कलाकारों द्वारा भारतीय संगीत के क्षेत्र मे प्रचलित हुई उसे जानने से पूर्व सितार के इतिहास पर संक्षिप्त रूप से प्रकाश डालना अति आवश्यक है।

सितार की उत्पत्ति के संदर्भ मे अनेकानेक मत एवं धारणाएं प्रचलित रहीं ह।

- कतिपय संगीतज्ञों एवं विद्वानो का ऐसा मानना है कि सितार ईरानी अथवा पशियन वाद्य है जो मुसलमानो के साथ हिंदुस्तााान आया।

- कतिपय अन्य का यह मानना है कि इस वाद्य का आविष्कार अमीर खुसरो(1253–1325)जो अलाउद्दीन खिलजी का दरबारी कवि था, ने किया।
- कुछ विद्वानो का यह भी अनुमान है कि सितार ईरानी वाद्य 'तम्बूरे' जो भारतीय तम्बूरे से अलग है का विकसित रूप है।
- आचार्य बृहस्पति,न्यामत खां सदारंग के छोटे भाई खुसरो खां को सितार का आविष्कारक मानते हैं,ये फिरोज खां अदारंग के पिता थे।
- कई वर्षों से इस क्षेत्र म अनेक विद्वानो एवं अनुसंधानकताओ ने अत्यन्त परिश्रम करके यह निश्चित करने का प्रयास किया है कि वस्तुतः सितार की उत्पत्ति का मूल कहां है। इसी श्रृंखला मे पं0 लालमणि मिश्र का मत है कि सितार पूर्णतः हिंदुस्तानी वाद्य है जिसका विकास त्रितंत्रो वीणा से हुआ।सितार वाद्य के विषय म अधिकतर विद्वानो का भी यहो मानना है कि यह वीणा का ही परिवर्तित एवं परिष्कृत रूप है।

सितार वादन के क्षेत्र म – सेनिया घराना, मैहर घराना, इमदादखानी घराना अथवा गौरोपुर घराना,इंदोरघराना, लखनऊ घराना तथा विष्णुपुर घराने जैसे घराने प्रसिद्ध हैं।इन घरानो से निकले हुए विभिन्न कलाकारों ने सितार वाद्य की विभिन्न वादन शेलियां विकसित कीं।उपर्युक्त वर्णित घरानो से संबंधित कलाकार वर्ग म उ0 अलाउद्दीन खाँ, इमदाद खाँ, विलायत खाँ, पं0 निखिल बनर्जी, उ0 मुश्ताक अली खाँ, अन्नपूर्णा जी, अब्दुल हलीम ज़ाफर खाँ और पं0 रविशंकर जी जैसे अनूठे कलाकारों ने भारतीय संगीत के क्षेत्र मे सितार वाद्य की वादन शैली को सुदृढ रूप प्रदान किया है। सितार वादन के विभिन्न कलाकारों ने सितार वाद्य के स्वरूप म, तार प्रयोग मे तथा वादन शैली आदि मे अनेक परिवर्तन किए। इन संगीतज्ञों की देन संगीत जगत द्वारा सदैव स्मरणीय रहेगी। इन्ही कलाकारों मे महत्वपूर्ण कलाकार महान सितार वादक पं0 रविशंकर जी का नाम विशेष आदर

का पात्र है।अतः प्रस्तुत संदर्भ मे पं0 रविशंकर जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का यहां संक्षेप मे उल्लेख करना शोधकर्त्री अपना कर्तव्य समझती ह।

पं0 रविशंकर जी का जन्म 7 अप्रैल 1920 को बनारस म हुआ तथा इनकी सितार शिक्षा उ0 अलाउद्दीन खां द्वारा सम्पन्न हुई पं0 जी की वादन शैली चमत्कारिक तथा उनकी सितार बजाने की तकनीक जटिल एवं श्रमसाध्य है। पं0 रविशंकर जी के सितार मिलाने की पद्धति के संदर्भ मे श्री भगवतशरण शर्मा जी ने 'हिंदुस्तानी संगीत शास्त्र'भाग–3 म लिखा है कि पं रविशंकर ने जोडे के एक तार के स्थान पर पंचम का और उसके बाद एक ठेठ खरज (अति मंद्र सप्तक के स) का तार लगाया है और सितार म चार सप्तक के वादन की सुविधा देकर इस वाद्य की गंभोरता को बढा दिया है।कहने का आशय यह है कि पं0 रविशंकर जी के सितार वादन म आलाप जोड–चौताल तथा धमार ताल मे प्रस्तुत करने पर बीन अंग अथवा ध्रुपद अंग तथा उनके मीड, कृन्तन, जमजमा आदि के प्रयोग मे ख्याल अंग व ठुमरी अंग विशेष दिखाई देते हैं।

पं0 जी अपने नये पयोगों के लिए सदैव ही भारतीय व पाश्चात्य संगीत जगत म प्रसिद्ध रहे।विभिन्न वादन शैली की तकनीकी मे प्रवीणता के साथ ही आपने कई नवीन रागों की रचना की जिनमे मुख्य रूप से रसिया, यमन मांझ, तिलक श्याम, जनसम्मोहिनी, मोहनकौंस , कामेश्वरी, गंगेश्वरो, कौशिक तोडी, सांझ कल्याण, राज्य कल्याण आदि रागों का उल्लेख मिलता है।

भाोधकत्री द्वारा प्रस्तुत विशय से सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण करने से ज्ञात होता है कि पं0 जी द्वारा संगीत जगत मे दिये गए योगदानो पर भाोध कार्य तो अव य हुआ है किंतु नवीन रागों की बदिशों के संकलन, स्वरलिपि, स्वरप्रयोग तथा उसके विश्लेषण आदि अन्य पक्षों को भी प्रकाश मे लाना अनिवार्य सा प्रतीत होता है। अतः पं0 रविशंकर जी द्वारा रचित नवीन रागों पर शोध कार्य की संभावनाएं अभी भी अपेक्षित है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

1. ‘स्वतंत्र भारत के नवनिर्मित कतिपय रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन’,मालती श्रीवास्तव,दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट,1992
2. ‘सितार वादन म राग प्रस्तुतीकरण की दृष्टि से नवीन प्रयोगों का समीक्षात्मक अध्ययन’, सीमा रावत,दिल्ली विश्वविद्यालय, 2004
3. ‘20वीं शती के कतिपय मूर्धन्य वाग्गेयकारों द्वारा निर्मित राग रूपों का सांगीतिक व विश्लेषणात्मक अध्ययन’, कु0 डिम्पल शर्मा,दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट, 2014
4. ‘20वीं शताब्दी के सितार के कतिपय प्रमुख कलाकारों का सितार एवं उसकी वादन शेली के विकास म योगदान', अंजुल अग्रवाल, दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट’,2006
5. ‘सितार वादन के क्षेत्र म उ0 विलायत खा, पं0 निखिल बनर्जी,पं0 रविशंकर, अब्दुल हलीम जाफर खा साहब का योगदान’, कु0 सुलेखा, दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट, 2012,

अध्ययन का विषय

भारतरत्न पं0 रविशंकर जी द्वारा रचित नवीन रागों का वि लेशणात्मक अध्ययन

अध्ययन के उद्देश्य

1. पं0 रविशंकर जी द्वारा रचित नवीन रागों का संपूर्ण विवरण –अध्ययन

2. नवनिर्मित रागों का चलन एवं बंदिशों का संकलन

3. नवीन रागों की सृजन विधि म मिश्रित अन्य रागों का अध्ययन

4. नवीन रागों म निहित कला पक्ष एवं भाव पक्ष का अध्ययन

5. पं0 रविशंकर जी द्वारा संगीत जगत को दिए गए योगदान का अध्ययन

परिसीमांकन

प्रस्तुत शोध प्रबंध म पं0 रविशंकर जी द्वारा निर्मित लगभग 20 नवीन रागों का अध्ययन किया जाएगा।

अध्ययन के स्त्रोत एवं विधि

प्रस्तावित शोध प्रबंध हेतु महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय के पुस्तकालयों, संगीत नाटक अकादमी, ललित कला अकादमी दिल्ली से सामग्री का एकत्रीकरण एवं पत्र–पत्रिकाओं, सी.डी.,डी.वी.डी. ,आकाशवाणी,दूरदर्शन, इंटरनेट यू–ट्यूब तथा कलाकारों के साक्षात्कार के आधार पर प्राप्त सम्बन्धित सामग्री द्वारा प्रस्तुत शोध प्रबंध को शोधकत्री द्वारा पूर्ण किया जाएगा।

अध्ययन की रूपरेखा

भूमिका

प्रथम अध्यायः–सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

द्वितीय अध्यायः–पं0 रविशंकर जी का परिचय–एक अध्ययन

तृतीय अध्यायः–पं0 रविशंकर जी का संगीत जगत म योगदान

चतुर्थ अध्यायः–पं0 रविशंकर जी, अन्य कलाकारों की दृष्टि मे

पंचम् अध्यायः–पं0 रविशंकर जी द्वारा नवनिर्मित रागों की बंदिशें एवं उनका विश्लेषणात्मक अध्ययन

षष्ठम् अध्यायः– उपसंहार

संदर्भ ग्रंथ सूची

पुस्तकें

1. गर्ग पं0 लक्ष्मीनारायण –हमारे संगीत रत्न,प्रकाशक–संगीत कार्यालय हाथरस, प्रथम आवृत्ति, जून 1957
2. मिश्र शम्भूनाथ–सात सुर सत्ताइस दायरे, सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1991
3. माथुर रामलाल –भारतीय संगीत और संगीतज्ञ, बोहरा प्रकाशनजयपुर,प्रथम संस्करण 1997
4. मिश्रा डॉ अरूण–भारतीय कंठ संगीत और वाद्य संगीत, गायन वादन सुमेल, कनिष्का पब्लिशर्स नई दिल्ली, प्रथमसंस्करण 2002
5. कासलीवाल डॉ. सुनीरा–सुरतारः संगीतपरक विविध सामग्री का संग्रह, कनिष्का पब्लिशर्स नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2002
6. मिश्र पं0 विजयशंकर–अंतर्नादः सुर और साज, कनिष्क पब्लिशर्स नई दिल्ली,प्रथम संस्करण 2004
7. मिश्र डॉ लालमणि–भारतीय संगीत वाद्य, प्रकाशक –भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, तृतीय संस्करण 2005
8. शर्मा शान्तनु– प्रतिष्ठित सितार एवं सरोद वादकों की साधना और संघर्ष, कनिष्क पब्लिशर्स नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2005

पत्रिकाएं

9. गर्ग डॉ मुकेश– सितार की एक मिसाल पं0 रविशंकर, संगीत पत्रिका, जुलाई 1991,VOL. 57
10. महाडिक डॉ प्रकाश–प्रसिद्ध कलाकारों का सितार मिलाना, संगीत पत्रिका, सितम्बर 1996, VOL. 62

11. गर्ग डॉ. लक्ष्मीनारायण–पं0 रविशंकर द्वारा नव निर्मित रागों का शास्त्रीय विवरण, संगीत पत्रिका, जुलाई 2005, VOL. 71